जैन जी. के.
General Knowledge
भाग - 3
डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

1 प्रार्थना

हे भगवन् !

आप कुछ करते नहीं, जानते हैं हम,
आप से कुछ नहीं, चाहते हैं हम।
आप मात्र जानते हैं, मानते हैं हम,
आप कर्त्ता-धर्त्ता नहीं, स्वीकारते हैं हम ।
आप आत्मलीन हैं, जानते हैं हम,
आप परिपूर्ण सुखी हैं, मानते हैं हम ।
अतः आप की भक्ति करते हैं हम,
आप जैसा बनना चाहते हैं हम ।

2 कौन हैं भगवान ?

जब हमने पूँछा तुम से- कौन हैं भगवान ?
तुमने कहा - आदिनाथ से महावीर तक सभी हैं भगवान।
जब पूँछा हमने यही भगवान से,
तब कहा भगवान ने हम से।
अन्यत्र कहीं न खोजो भगवान को,
तुम स्वयं में स्वयं खोजो भगवान को।
अन्यत्र कहीं नहीं हैं भगवान,
तुम स्वयं ही हो भगवान।
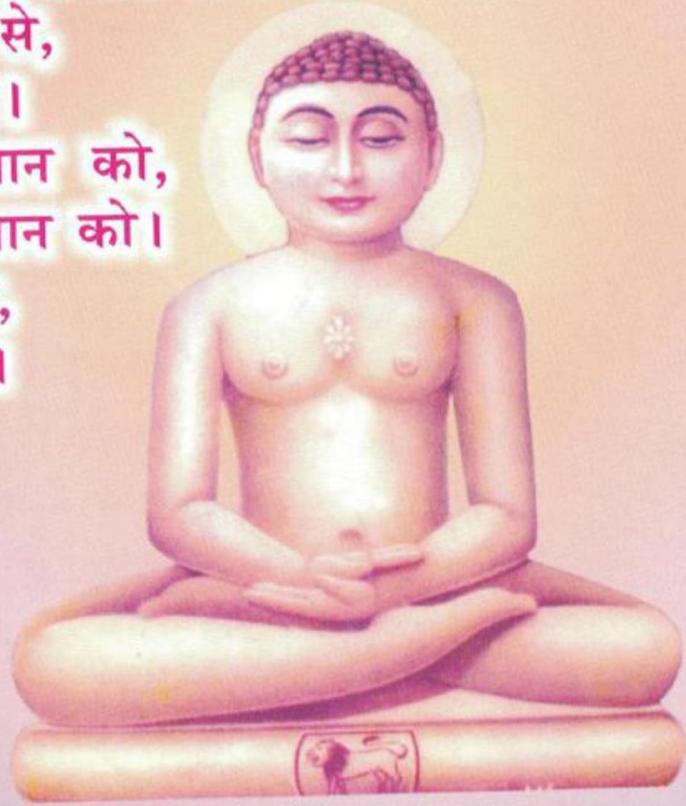
3 सच्चे देव
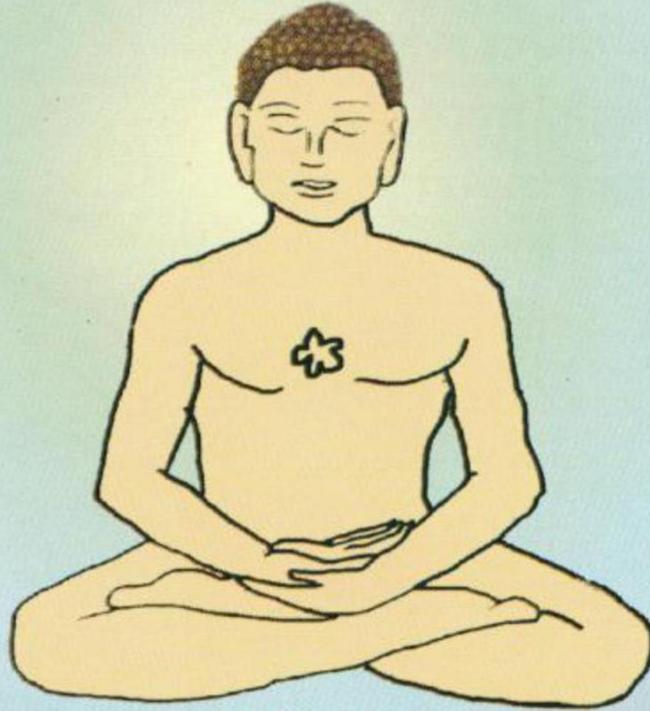
समस्त इच्छायें नष्ट हो गईं जिनके,
सम्पूर्ण ज्ञान का विकास हो गया उनके।
राग - द्वेष नहीं जिनके; अज्ञान भी नहीं जिनके,
तत्त्वों का उपदेश सच्चा - अच्छा होता उनके।
जन्मादि अठारह दोष नहीं जिनको,
भूख - प्यास भी नहीं लगती उनको।
वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी भी कहते जिनको,
बताओ तो क्या कहते उनको?

सच्चे देव

4 सच्चे शास्त्र

तत्त्व का उपदेश होता मुझमें,
वीतरागता का ही पोषण होता मुझमें।
सम्यक्नय से समझते मुझको,
मोक्षमार्ग जानने पढ़ते मुझको।
सच्चे देव की वाणी हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं?

सच्चे शास्त्र
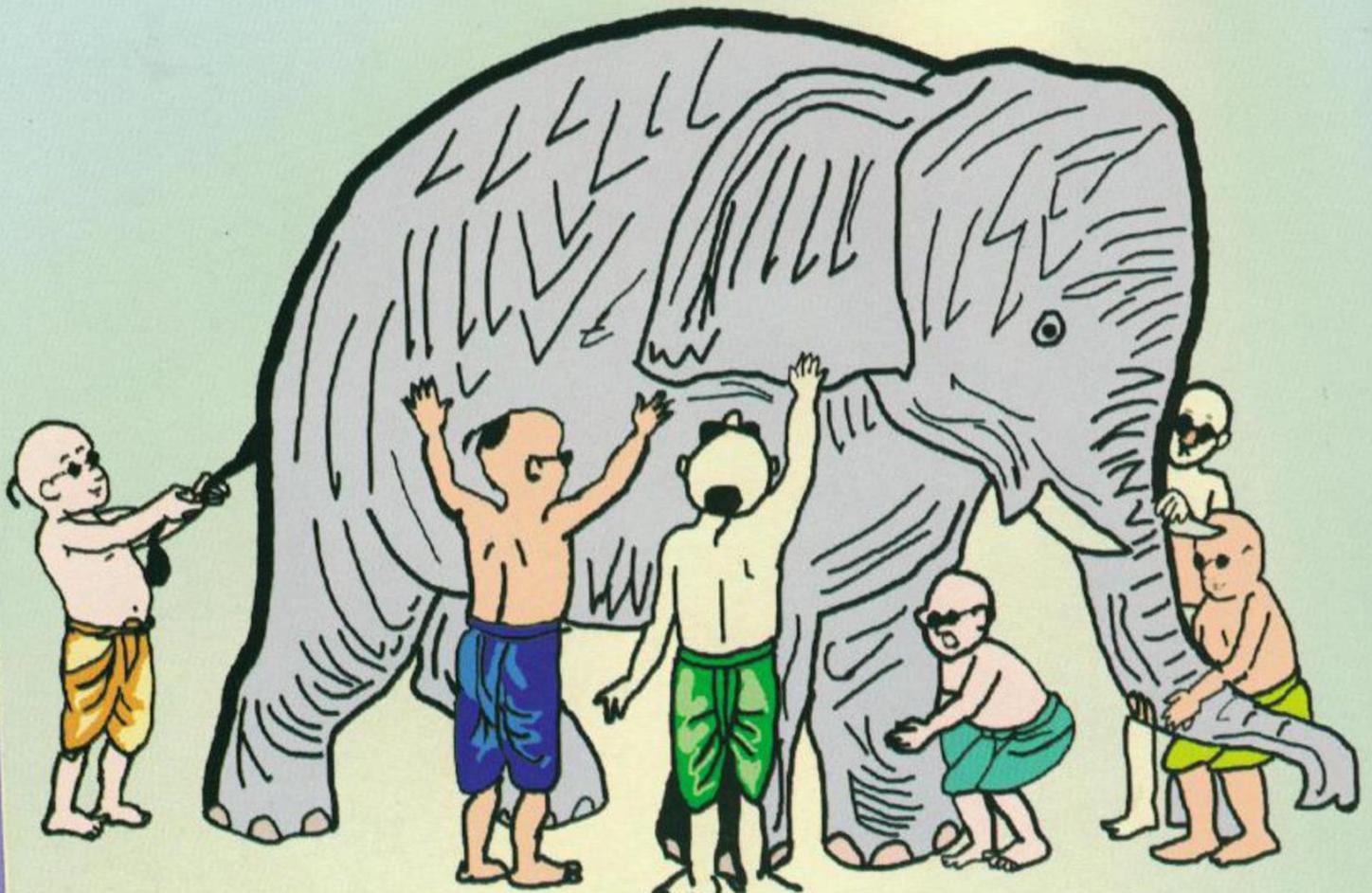
5
सच्चे गुरु
घर में न रमें, वन में रमते हैं ।
तन में न रमें, चेतन में रमते हैं ।।
राग में न रचें, वैराग्य में रचते हैं ।
भोग में न रचें, योग में रचते हैं ।।
रूप में न बसें, स्वरूप में बसते हैं ।
अज्ञान में न बसें, ज्ञान में बसते हैं ।।
मिथ्यात्व में न रहें, सम्यक्त्व में रहते हैं।
जनता में न रहें, एकान्त में रहते हैं ।।
उपदेश एकान्त का नहीं, अनेकान्त का देते हैं ।
ध्यान परमात्मा का नहीं, शुद्धात्मा का करते हैं ।।
मुक्ति पथ के पथिक हैं, निर्ग्रन्थ हैं ।
मुनिराज हैं, बताओ वे कौन हैं ?
सच्चे गुरु
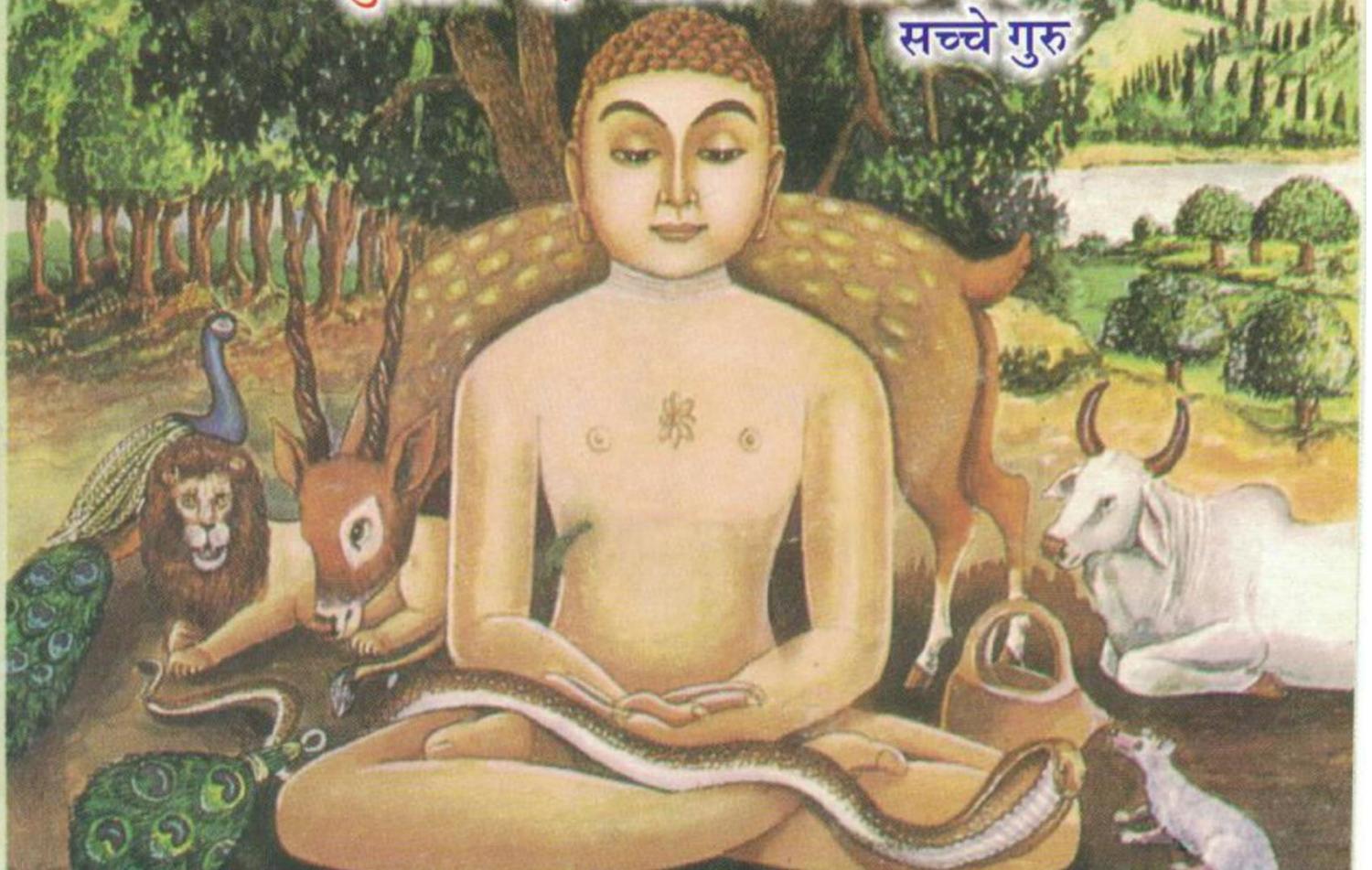
6 समवशरण

1. समवशरण किसकी आज्ञा से कौन बनाता है ?
   सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ।
2. समवशरण को कुबेर किस प्रकार बनाता है ?
   विक्रिया ऋद्धि से ।
3. समवशरण का आकार कैसा होता है ?
   गोल ।
4. समवशरण में प्रत्येक दिशा में कितनी सीढियां होती हैं ?
   २० - २० हजार ।
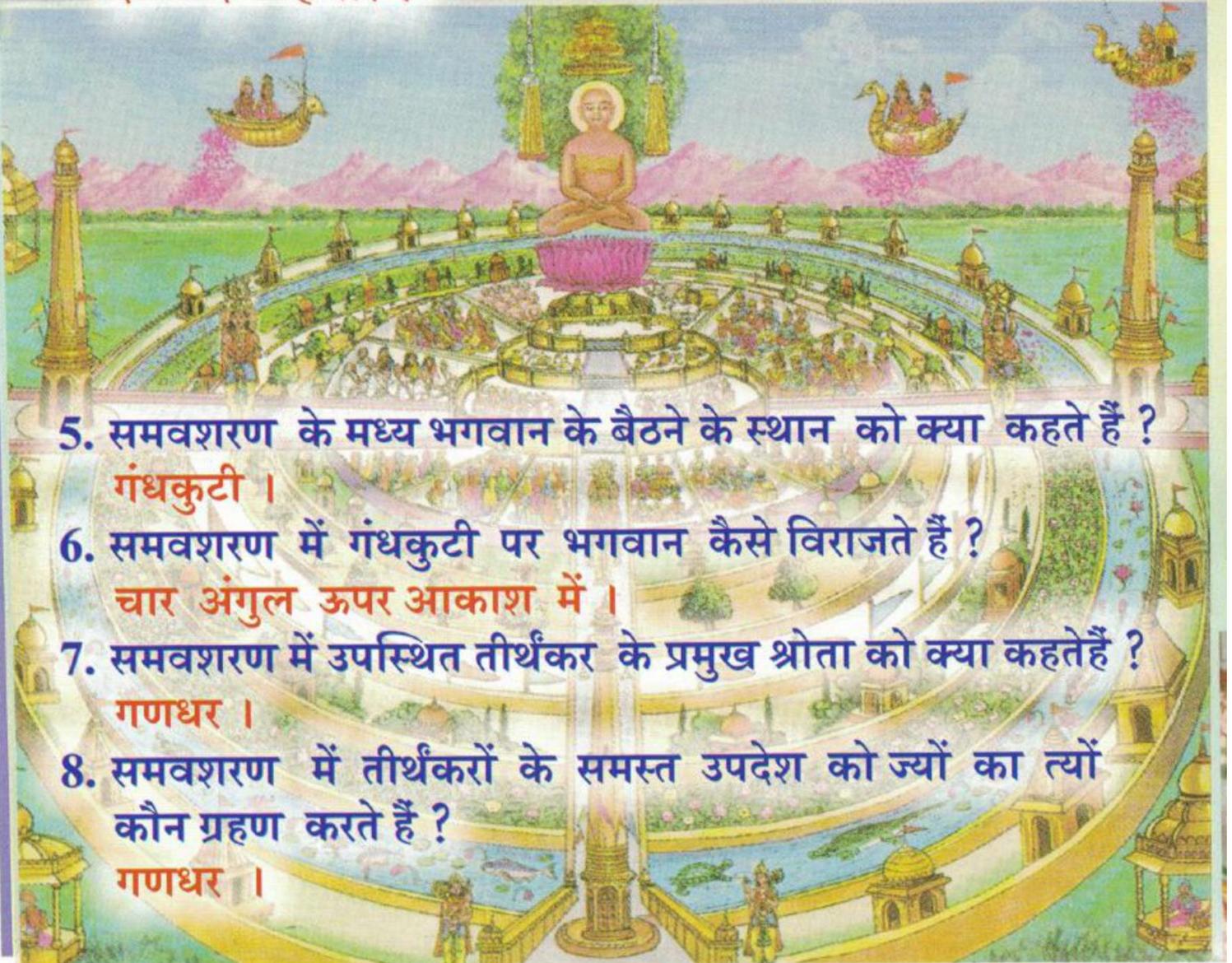
5. समवशरण के मध्य भगवान के बैठने के स्थान को क्या कहते हैं ?
   गंधकुटी ।
6. समवशरण में गंधकुटी पर भगवान कैसे विराजते हैं ?
   चार अंगुल ऊपर आकाश में ।
7. समवशरण में उपस्थित तीर्थंकर के प्रमुख श्रोता को क्या कहतेहैं ?
   गणधर ।
8. समवशरण में तीर्थंकरों के समस्त उपदेश को ज्यों का त्यों कौन ग्रहण करते हैं ?
   गणधर ।

7

दिव्यध्वनि

1. क्या दिव्यध्वनि ॐकार रूप होती है ?
   हाँ, हाँ, हाँ ।
2. क्या तीर्थंकरों को उपदेश देने की इच्छा होती है ?
   ना, ना, ना ।
3. क्या उनके उपदेश को सुनकर भव्यजीव स्वयं प्रेरित होते हैं ?
   हाँ, हाँ, हाँ ।
4. क्या दिव्यध्वनि खिरते समय भगवान का मुख हिलता है ?
   ना, ना, ना ।
5. क्या दिव्यध्वनि 7 घंटे 12 मिनिट खिरती है ?
   हाँ, हाँ, हाँ ।
6. क्या दिव्यध्वनि 7 घंटे 12 मिनिट लगातार खिरती है ?
   ना, ना, ना ।
7. क्या दिव्यध्वनि एक बार में 2 घंटे 24 मिनिट खिरती है ?
   हाँ, हाँ, हाँ ।
8. क्या सभी भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है ?
   ना, ना, ना ।

8 क्या आप जानते हैं ?
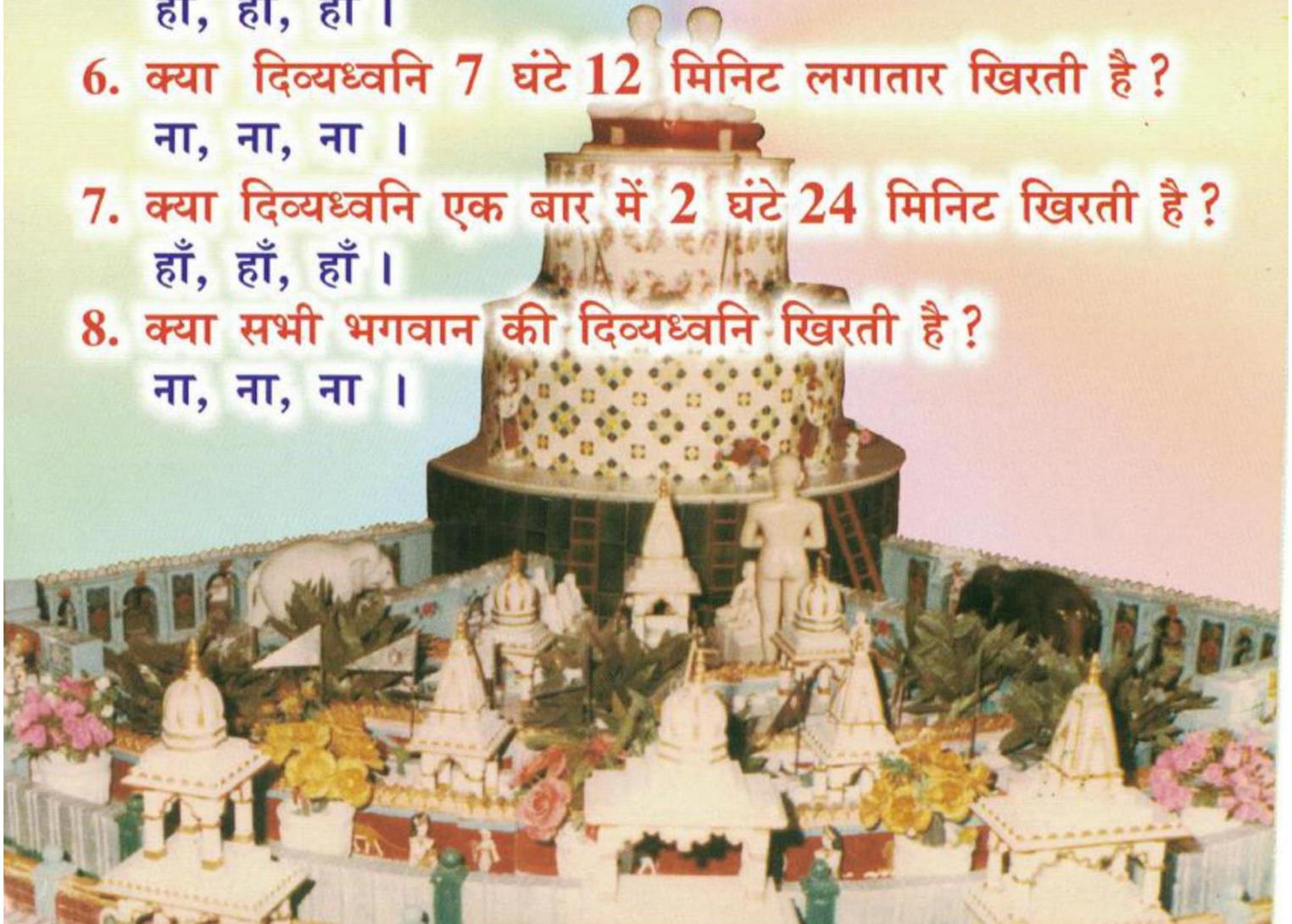
1. जीव गतियों में क्यों घूमता है ?
   अपने स्वरूप को भूलकर ।
2. जीव की गल्ती क्या है ?
   मोह - राग - द्वेष रूप विकारों को करना ।
3. जीव की इस गल्ती की सजा क्या है ?
   जीव का कर्मों से बंधना ।
4. जीव की कर्म बंधन सहित अवस्था का क्या नाम है ?
   संसार अवस्था।
5. जीव को कर्म का बंधन कब से है ?
   अनादि से।
6. कर्मबद्ध जीव कहाँ रहते हैं ?
   चारों गतियों में ।
7. चारों गतियों में सुख कौन सी गति में है ?
   किसी भी गति में सच्चा सुख नहीं है ।

9 बताओ तो जानें

1. सच्चा सुख किन भावों से मिलता है ?
   शुद्धभावों से।
2. भाव कितने प्रकार के होते हैं ?
   दो- शुद्ध और अशुद्ध ।
3. अशुद्ध भाव कितने प्रकार के होते हैं ?
   दो- शुभ और अशुभ ।
4. शुभ और अशुभ भावों से किस का बंध होता है ?
   पुण्य और पाप का ।
5. शुद्ध भावों से किस का बंध होता है ?
   शुद्ध भावों से बंध नहीं, बंध का अभाव होता है ।
6. शुद्ध भाव अधिकतम कितने समय तक रह सकते हैं ?
   अनंतकाल ।
7. शुभ - अशुभ भाव अधिकतम कितने समय तक रह सकते हैं ?
   शुभ - अशुभ भाव एक साथ अंतमुर्हुत से अधिक नहीं रह सकते, वे 48 मिनिट के अंदर बदलते ही हैं।

10

कर्म
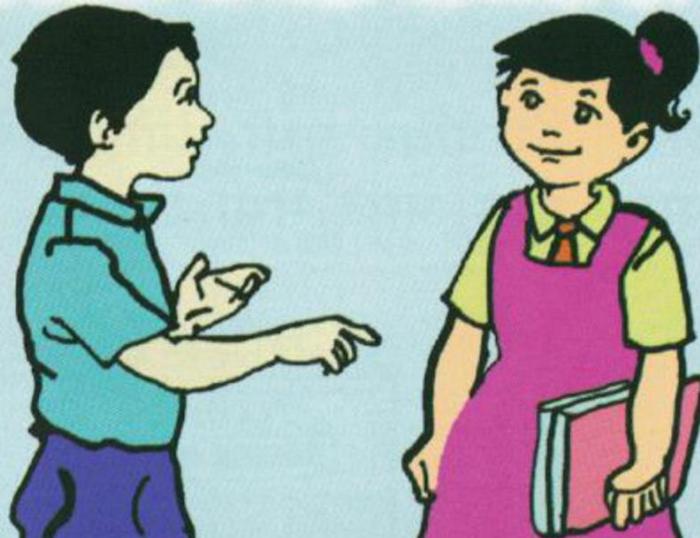
1. भावकर्म किसे कहते हैं ?
   मोह-राग-द्वेष भावों को।
2. द्रव्यकर्म किसे कहते हैं ?

   कार्माण वर्गणा का कर्मरूप परिणमित पुद्गलपिंड को।
3. द्रव्यकर्म कितने प्रकार के होते हैं ? और कौन - कौन से?
   चार घातिकर्म और चार अघाति कर्म - इसप्रकार कुल आठ प्रकार के द्रव्य कर्म होते हैं ।
4. घाति कर्मों के नाम बताओ?
   ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अंतराय ।

5. अघाति कर्मों के नाम बताओ.
   वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र ।
6. घाति कर्म किन्हें नहीं होते ?
   अरहंतों को और सिद्धों को।
7. अघाति कर्म किसे नहीं होते हैं ?
   मात्र सिद्ध जीवों को।

8. घाति और अघाति कर्म किनको होते है ?
   सभी संसारी जीवों को।
9. नोकर्म किसे कहते हैं ?
   शरीर और शरीर से संबंधित सभी संयोग जैसे- स्त्री, पुत्र, मकान, रुपया - पैसा आदि सभी संयोगी बाह्य पदार्थ ।
10. क्या शरीर होते हुए परिपूर्ण सुखी हो सकते हैं ?

   हाँ ।

11 सही उत्तर चुनिए

1. भावकर्म किसे होते हैं ?
   (अ) रागी-द्वेषी जीवो को, (ब) अरहंतों को, (क) सिद्धों को। — अ
2. भाव कर्म किसे नहीं होते हैं ?
   (अ) देवताओं को, (ब) अरहंतों को । — ब
3. दुःख में कौन सा कर्म निमित्त है ?
   (अ) मोहनीय कर्म (ब) अघाति कर्म (क) नोकर्म । — अ
4. रागी-द्वेषी संसारी जीवों के कितने द्रव्य कर्म होते हैं ?
   (अ) एक भी नहीं, (ब) चार, (क) आठ। — क
5. अरहंतों के कितने द्रव्य कर्म होते हैं ?
   (अ) एक भी नहीं, (ब) चार, (क) आठ। — ब
6. सिद्धों के कितने कर्म होते हैं ?
   (अ) एक भी नहीं, (ब) चार, (क) आठ। — अ
7. घाति कर्म किनको होते हैं ?
   (अ) रागी-द्वेषी जीवो को, (ब) अरहंतों को, (क) सिद्धों को। — अ
8. मात्र अघाति कर्म किन्हें होते हैं ?
   (अ) रागी-द्वेषी जीवो को, (ब) अरहंतों को, (क) सिद्धों को। — ब
9. अघाति कर्म किन्हें नहीं होते हैं ?
   (अ) रागी-द्वेषी जीवो को, (ब) अरहंतों को, (क) सिद्धों को। — क
10. शरीर किसको नहीं होता है ?
    (अ) अरहंतों को, (ब) सिद्धों को। — ब

12 क्या करती हैं इन्द्रियाँ ?

संसारी आत्मा को ज्ञान में निमित्त होतीं इन्द्रियाँ,
उन्हें भोगों में उलझाने में भी निमित्त होतीं इन्द्रियाँ।

क्योंकि -

पुद्गल को ही मात्र जानती हैं इन्द्रियाँ,
आत्मज्ञान नहीं करा सकती हैं इन्द्रियाँ।

जबकि -

आत्मा का हित तो है आत्मा के जानने में,
आत्मा का हित है अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति में।

अत: -

पर को जानने वाला इन्द्रियज्ञान भी हेय ही है,
मात्र अतीन्द्रिय ज्ञान ही उपादेय है।

वस्तुत: तो-

जानता तो है आत्मा,
निमित्त होती इन्द्रियाँ।

इसलिए -

जो इन्द्रियाँ को जीतता,
वही जितेन्द्रिय जिन बनता।
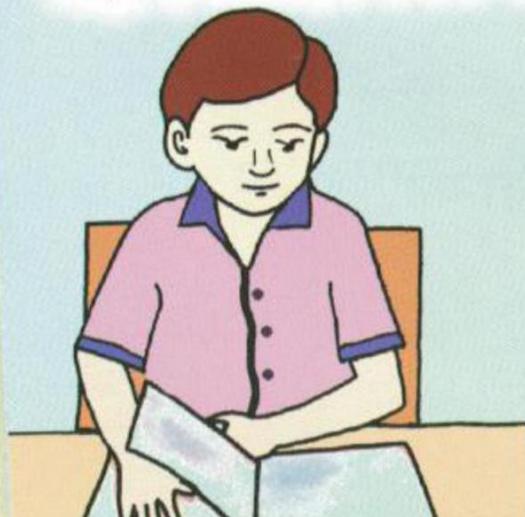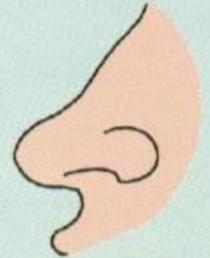
13 अपना परिचय
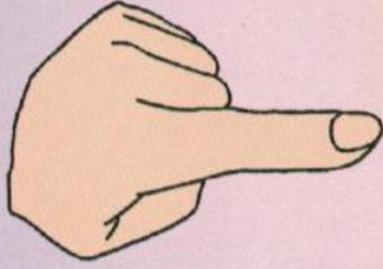
अपना परिचय दूँ मैं,
आत्मा हूँ मात्र मैं।
जानता हूँ सब को मैं,
जानने में आता सबके मैं।
शरीर में रहता हूँ मैं[1],
पर शरीर नहीं हूँ मैं।
इंद्रियों को जीव नहीं मानूँ मैं,
ईश्वर को कर्त्ता-धर्त्ता नहीं मानूँ मैं।
पर का कर्त्ता-धर्त्ता नहीं मैं,
अपना कर्त्ता-धर्त्ता स्वयं ही हूँ मैं।

1 संसारी अवस्था में

14 जिनागम से

1. प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं ?
एक शरीर में एक जीव के रहने को प्रत्येक वनस्पति कहते हैं ।

2. प्रत्येक वनस्पति कितने प्रकार की होती है ? नाम बताइए ।
दो - अप्रतिष्ठित और सप्रतिष्ठित ।

3. अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं ?
जिस प्रत्येक वनस्पति के शरीर में निगोदिया जीव नहीं रहते हैं। जैसे - आम, संतरा ।

4. सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं ?
जिस प्रत्येक वनस्पति के शरीर में निगोदिया जीव रहते हैं। जैसे - आलु, गाजर, मूली, अदरक ।

6. क्या पृथ्वीकायादि में भी साधारण शरीर होता है ?
नहीं, पृथ्वीकायादि जीव प्रत्येक शरीर ही होते हैं।

7. क्या प्रत्येक शरीर वनस्पति सूक्ष्म भी होते हैं ?
नहीं, प्रत्येक शरीर वनस्पति बादर (स्थूल) ही होते हैं?

8. जिन पदार्थों को खाने में (अनंत) स्थावर जीवों का घात होता हो, उन्हें क्या कहते हैं ?
बहुघात ।

9. सिद्ध जीव स्थावर होते हैं या त्रस ?
दोनों नहीं, क्योंकि ये दोनों भेद संसारियों के हैं ।

15 पाप में भागीदारी
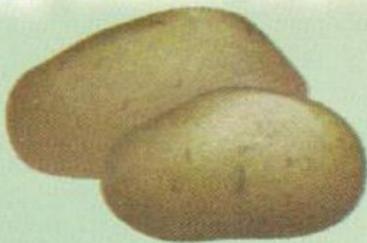
(मांस भक्षण के पोषण में निमित्त कहता है)

निमित्त: अपने लिए कुछ नहीं बनवाता मैं,
बनी - बनाई चीजें ही खाता हूँ मैं।
मेरे निमित्त से नहीं मरते हैं जीव,
क्योंकि खाता नहीं मैं उन्हें सजीव।
जिसको मरना होता, जब वह मर जाता,
जो बनना होता, जब वह बन जाता।
तब मुझको जो अच्छा लगता, वह ही मैं खाता,
इसलिए उनके मरने के पाप का मैं हकदार नहीं बनता।

गुरुजी: तुम्हारे लिए बनी नहीं,
यह बहाना चलेगा नहीं।
यदि तुम खाओगे तो,
पाप से बचोगे नहीं।

निमित्त: मैं न खाऊंगा, तो कोई और खाएगा;
जो बन गया है, वह पेट में ही जाएगा।
एक अकेले मेरे न खाने से क्या फर्क पड़ता है?
दुनिया में तो सब को सब चलता है।
मैं खाऊँ या नहीं,
चीजें बनने से रुकेंगी नहीं।

गुरुजी: तुम खाओगे ही नहीं,
तो चीजें बनेंगी ही नहीं।
ग्राहक के लिए बनती चीजें,
ग्राहक न हो तो क्यों बनें चीजें?
यदि तुम ग्राहक बनोगे,
तो पाप के भागीदार बनोगे।
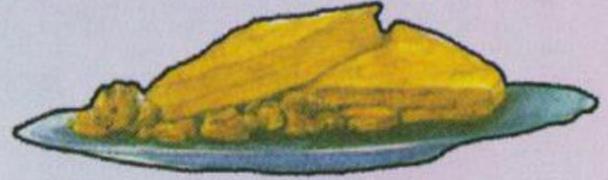
16 सुख का समुंदर

सुख का होगा खजाना वहाँ,
ढूँढने पर भगवान मिलेंगे जहाँ।
न जाना आज तक यह मैंने,
न पहिचाना अपने को ही मैंने।
इसलिए
मैं पूँछता रहा जहाँ[1] से,
भगवान मिलते मुझे कहाँ से।
क्योंकि
भगवान थे मेरे अंदर,
मैं ढूंढता रहा पर के ऊपर।
किन्तु
आज जान गया मैं अपना स्वरूप,
मैं तो स्वयं ही हूँ परमात्मरूप।
सच्चा सुख भी तो है मेरे अंदर,
मैं तो हूँ सुख का समुंदर।

1 दुनिया

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, ललितपुर - झांसी के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री अभिनंदन कुमारजी टड़ैया के सुपुत्र श्री अविनाश कुमारजी टड़ैया की धर्मपत्नी धर्म पत्नी एवं प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (मध्यप्रदेश) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ। अध्यात्मिक वातावरण एवं धार्मिक संस्कारों में पलीपुसी डॉ. शुद्धात्मप्रभा निरंतर अध्ययनशील रही हैं। सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का डायमंड एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, पंडित टोडरमलस्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित, शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में भी आपका सराहनीय योगदान रहता है।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा बचपन से ही प्रतिभाशाली रहीं हैं। आपने **बी.ए.** (ऑनर्स) संस्कृत में **स्वर्णपदक** प्राप्त किया। आपके द्वारा **एम. ए.** में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई **आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय** नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई। इस कृति में आ. अमृतचंद्र के व्यक्तित्व के साथ - साथ पुरुषार्थसिध्युपाय ग्रंथ का विभिन्न दृष्टि से समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

पी.एच. डी. के शोध-प्रबंध में आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथो की समस्त विषय वस्तु को सीधी-सादी, सरल-सुबोध भाषा में संक्षेप में प्रस्तुत किया ही है, साथ-ही-साथ उनकी अमृतचंद्रीय और जयसेनीय टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न - भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

समस्त प्राणियों का मुख्य उद्देश्य 'सुख प्राप्ति' को डायरी शैली में लिखी गई **तलाश : सुख** की पुस्तक में ७४ वर्षीया वृद्धा के माध्यम से बताया गया है। जैनदर्शन के सार को सरल व संक्षेप में प्रस्तुत करने वाली **जैनदर्शनसार**, युवा वर्ग में धार्मिक संस्कार देने की दृष्टि से पत्र शैली में लिखी **विचार के पत्र: विकार के नाम**, किशोरवर्ग (Teen aggers)के चिंतन को नई दिशा देने वाली **सत्ता का सुख, संस्कार का चमत्कार** पुस्तकें नाटक के रूप में लिखी गई हैं और **मुक्ति की युक्ति** एवं **प्रमाणज्ञान** पुस्तकें पद्यात्मक संवादों में लिखी गई हैं। **सत्ता का सुख**, कृति में छह द्रव्यों का वर्णन व्यंग्यात्मक रूप में किया गया है। साथ ही इस पुस्तक में नेमिकुमार के वैराग्य के प्रसंग को तथा राम वनवास प्रसंग को भी नए चिंतन के साथ प्रस्तुत किया है। **मुक्ति की युक्ति** 'यथा नाम तथा गुण' पुस्तक है। इसमें पद्यात्मक संवादों के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का उपाय संक्षेप में बताया है। इस कृति में शरीर - आत्मा, मिथ्यात्व - आत्मा का काल्पनिक संवाद द्वारा उनका स्वरूप और संबंध प्रस्तुत किया गया है तथा कर्मों का स्वरूप एकांकी के रूप में बताया है।

बाल मनोविज्ञान और बाल मनोभावों को समझते हुए उनके सरल मन को धार्मिक ज्ञान देने के लिए संवाद शैली में लिखी **चलो पाठशाला : चलो सिनेमा भाग - १, भाग - २**, और आधुनिक शैली में लिखी गईं **जैन नर्सरी , जैन के. जी. भाग -१, भाग - २, भाग -३** बालकों को लुभाने में अत्यंत सफल रही हैं। दो साल की अल्पावधि में सवा लाख प्रतियों का बिक जाना इन पुस्तकों की भाषा - शैली आदि की लोक प्रियता का प्रबलतम प्रमाण है। बाल पुस्तकों की इसी श्रृखंला में ७ से १० वर्ष तक के बच्चों के दृष्टिकोण से लिखी गई जैनदर्शन की सामान्य जानकारी देने वाली **जैन जी. के.** के चार भागों का एवं जैन शब्दावली की जानकारी देने वाली **शब्दों की रेल** पुस्तक का प्रकाशन हम शीघ्र कर रहे हैं। कथा साहित्य की दृष्टि से जैन पुराण के आधार पर सरल, प्रवाहपूर्ण आधुनिक शैली में राम कथा के मार्मिक पहलू को स्पष्ट करने वाली **रामकहानी** ने भी अपार ख्याति प्राप्त अर्जित की है।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी २१ पुस्तकें लिखी गईं हैं, जिनकी सूची प्रकाशित की गई है।